भारत सरकार

जनजातीय कार्य मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या- 2986

उत्तर देने की तारीख- 12/12/2024

जनजातीय भाषाओं का संरक्षण

2986. श्रीमती जोबा माझी:

क्या जनजातीय कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार के पास झारखंड की आदिम जनजातियों, जिनकी जनसंख्या लगभग तीन लाख है, द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं की लिपियों को संरक्षित और विकसित करने की कोई योजना है क्योंकि उनकी संस्कृति की पहचान वाली भाषा विलुप्त होने के कगार पर है, जो कुल जनजातीय आबादी का लगभग चार प्रतिशत है और जिनमें मुख्य रूप से बिरजिया, कोरवा, माल पहाड़िया, परहैया, सौरिया पहाड़िया, खड़िया जैसी आदिम जनजातियाँ शामिल हैं; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उक्त भाषाओं के संभावित विलुप्त होने के क्या कारण हैं?

उत्तर

जनजातीय कार्य राज्य मंत्री
(श्री दुर्गादास उइके)

(क) तथा (ख): जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, केन्द्रीय प्रायोजित योजना 'जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) को सहायता' के अंतर्गत झारखंड सहित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) को आदिम जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं सहित जनजातीय भाषाओं और लिपियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए नीचे उल्लिखित शुरू की गई परियोजनाओं/गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है :

I. जनजातीय भाषाओं में द्विभाषी शब्दकोष और त्रिभाषी प्रवीणता मॉड्यूल तैयार करना।
II. नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बहुभाषी शिक्षा (एमएलई) उपाय के तहत जनजातीय भाषाओं में कक्षा I, II और III के विद्यार्थियों के लिए प्रवेशिकाएं (प्राइमर) तैयार करना। जनजातीय भाषाओं में वर्णमाला, स्थानीय कविताएँ और कहानियाँ प्रकाशित करना।
III. जनजातीय साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न जनजातीय भाषाओं पर पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ (जर्नल्स) प्रकाशित करना।
IV. जनजातीय लोक परंपरा के संरक्षण और संवर्धन के लिए विभिन्न जनजातियों के लोकगीतों और लोककथाओं का दस्तावेजीकरण करना। मौखिक साहित्य (गानों, पहेलियाँ, गीतों (गाथाओं) आदि) एकत्रित करना।

V. सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन के अंतर्गत आने वाले राज्यों में स्थानीय जनजातीय बोलियों में सिकल सेल एनीमिया रोग जागरूकता मॉड्यूल I और निदान और उपचार मॉड्यूल II के बारे में प्रशिक्षण मॉड्यूल का अनुवाद और प्रकाशन।

VI. सम्मेलन, सेमिनार, कार्यशालाएँ और काव्य संगोष्ठियाँ आयोजित करना।

2. इन परियोजनाओं और गतिविधियों के माध्यम से, जनजातीय समुदायों को सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और आदान-प्रदान कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सरकारी आश्रम विद्यालयों के शिक्षकों के साथ-साथ संबंधित समुदायों के भाषा विशेषज्ञ जनजातीय बोलियों और भाषा में शब्दकोष और प्रवेशिकाएं (प्राइमर्स) विकसित करने में शामिल हैं, जो न केवल जनजातीय भाषाओं को संरक्षित और परिरक्षित करता है, बल्कि कक्षा I से III तक जनजातीय छात्रों को बुनियादी शिक्षा (अधिगम) में मदद करता है और जब वे उच्च कक्षाओं में जाते हैं तो उन्हें सहज पारण (ट्रांजीशन) में मदद करता है। टीआरआई कार्यक्षेत्र (फील्ड) के कार्यकर्ताओं (फ्रंट-लाइन कार्यकर्ताओं) के लिए जनजातीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

3. इसके अलावा, नई शिक्षा नीति में यह भी निर्धारित है कि छोटे बच्चे अपनी घरेलू भाषा और मातृभाषा में जल्दी सीखें और समझें। तदनुसार, केंद्र और राज्य सरकारें शिक्षा प्रदान करने और भाषा के संरक्षण के लिए बहुभाषी नीति को प्रोत्साहित कर रही हैं। जैसा कि शिक्षा मंत्रालय द्वारा सूचित किया गया है, मंत्रालय ने 2013 में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), मैसूर के तहत "लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण और परिरक्षण योजना (एसपीपीईएल)" शुरू की थी। यह परियोजना प्रवेशिकाओं (प्राइमर्स), द्वि/त्रिभाषी शब्दकोषों (इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट प्रारूप), व्याकरणिक रेखाचित्रों (स्केचेज), सचित्र शब्दावलियों और समुदाय की नृजातीय भाषा विज्ञान प्रोफ़ाइल के रूप में 10,000 से कम लोगों (वक्ताओं) द्वारा बोली जाने वाली भारत की मातृभाषाओं/भारतीय भाषाओं की भाषा और संस्कृति का दस्तावेजीकरण कर रही है। पहले चरण में, उन्होंने 117 जनजातीय भाषाओं की पहचान की है, ताकि उन भाषाओं पर काम किया जा सके, जिन्हें लगभग 10,000 से कम लोगों द्वारा बोला जाता है। सीआईआईएल के सात क्षेत्रीय भाषा केंद्र (आरएलसी) सेवारत और भावी स्कूल शिक्षकों के लिए भाषा शिक्षा में दस महीने का डिप्लोमा प्रदान करते हैं। इनमें से, पूर्वी क्षेत्रीय भाषा केंद्र (ईआरएलसी) और पूर्वोत्तर क्षेत्रीय भाषा केंद्र (एनईआरएलसी) क्रमशः संथाली और बोडो में दस महीने का डिप्लोमा प्रदान करते हैं। संस्थान ने एनसीईआरटी के सहयोग से कई जनजातीय भाषाओं के लिए प्राइमर तैयार किए हैं। इन प्राइमरों से जनजातीय भाषाओं के बोलने वालों के साथ-साथ इन भाषाओं में शिक्षा देने वालों को भी मदद मिलने की उम्मीद है।

4. जैसा कि सूचित किया गया है, जनजातीय संस्थान, झारखंड ने विलुप्त होती भाषाओं के संरक्षण के लिए उन पर कुल 22 पुस्तकें विकसित और प्रकाशित की हैं।

*****